

समाज विकासमाला

आप भला, जग भला

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ६२

आप भला, जग भला

बहनों के नाम लिखे गांधीजी के शिक्षाप्रद पत्रों के अंश

संग्राहक
अशोक

संपादक
यशपाल जैन

१९५९
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

प्रथम बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

('नवजीवन ट्रस्ट', अहमदाबाद,
की सहमति से)

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो, तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

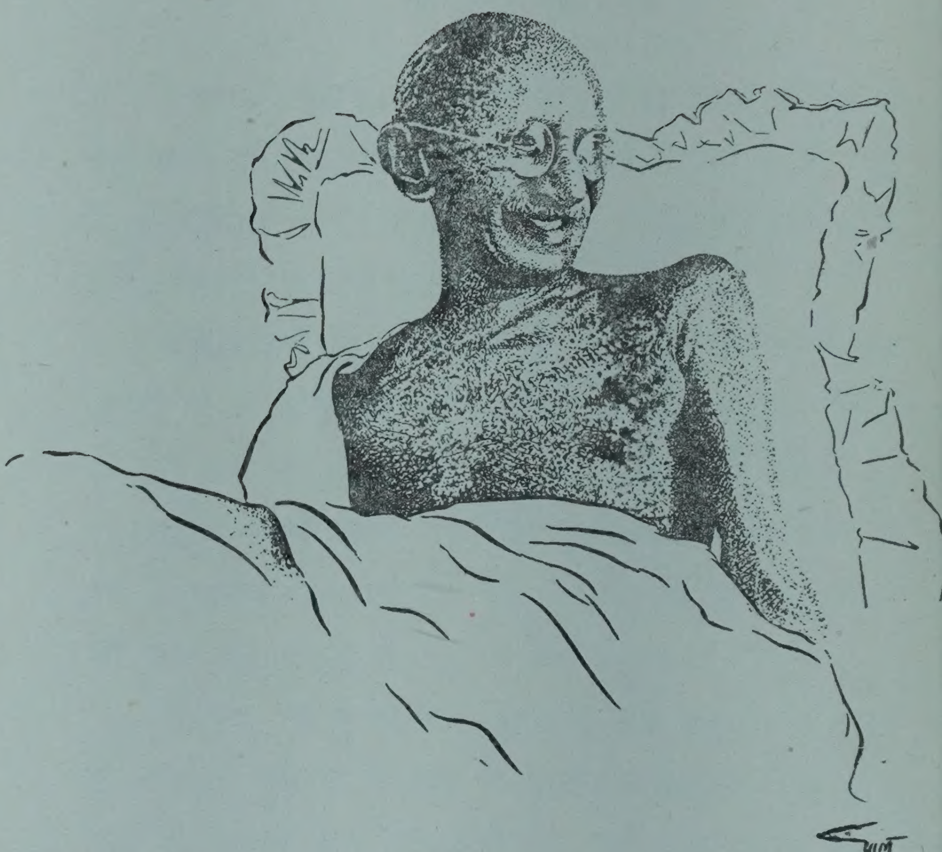
पाठकों से

गांधीजी हमेशा आदमी को ऊंचा उठने की सीख देते रहते थे। अपने आश्रम के भाई-बहनों से तो वह बहुत अधिक आशा रखते थे और उन्हें आचार और व्यवहार की बातें बराबर बताते रहते थे।

साबरमती में गांधीजी के आश्रम की बात सब जानते हैं। आजादी की लड़ाई के शुरू के उन दिनों में जब सब मर्द जेल चले गये तो आश्रम में बहनें ही रह गईं। उनके नाम गांधीजी यरवडा-जेल से बराबर पत्र लिखकर शिक्षाएं देते रहे। बाद में बाहर आकर भी जब वह सफर में रहे तो पत्र लिखना न भूले।

वे पत्र, 'बापू के पत्र, आश्रम की बहनों के नाम' के नाम से पुस्तक के रूप में 'नवजीवन-ट्रस्ट' अहमदाबाद से निकले हैं। उन्हींमें से चुने हुए अंश लेकर यहां दिये गए हैं। पत्र इतने शिक्षाप्रद हैं कि हमेशा ताजे रहेंगे और जो भी इन्हें पढ़ेगा, उसे लाभ ही होगा।

—संपादक



महात्मा गांधी

: १ :

आप भला, जग भला

सब साफ़ हों, तभी एक भी साफ़ होगा, ऐसा उलटा न्याय न करना। नियम यह है कि एक साफ़ हो जाय, तो दूसरे होंगे ही। इस संबंध की हमारे यहां दो कहावतें हैं—(१) आप भला तो जग भला, (२) यथा पिंडे तथा ब्रह्माण्डे। अगर ऐसा न हो, तो दुनिया के लिए कभी आशा ही नहीं रखी जा सकती।

राम जगत की लाज रखता है। सीता स्त्री-मात्र के लिए आधार है। इसलिए निराश न होकर सब शुद्ध बनने के लिए मेहनत करोगी और अपने कर्त्तव्य में परायण रहोगी, तो तुम देखोगी कि सब ठीक हो जायगा। 'हारना' शब्द हमारे शब्द-कोश में हो ही नहीं सकता।

... ...

तुममें लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? द्वेष-भाव कहां पैदा होता है? दोष किसका है? इन सब बातों की तुम जांच करना।

धर्म तो यह कहता है कि जबतक मनुष्य अपने मैल को जमा करता है, तबतक वह अपवित्र है; ईश्वर

के पास खड़ा होने लायक नहीं है। इसलिए तुम्हारा पहला काम तो यह है कि जिसमें मैल हो, वह उसे प्रकट करके धो डाले।

जिसके मन में जिसके विरुद्ध जो-कुछ भी भरा हो, उसे वह बाहर निकालकर फेंक दे, यह आत्म-शुद्धि की पहली सीढ़ी है। हमारे पड़ोसी के प्रति हमारे मन में जो मैल हो, शंका हो, उसे जबतक हम दूर न कर दें, तबतक उसके प्रति प्रेम रखने का पहला पाठ भी हम अमल में नहीं ला सकते।

... ...

मालूम होता है कि मेरे पिछले पत्र से तुममें काफ़ी खलबली मची हुई है। यह खलबली मुझे पसंद है। नम्रता के नाते तुम एक-दूसरी के साथ मिलो-जुलो, इतने से मुझे संतोष नहीं होगा, तुम भी संतोष न मानना। हमें कभी भी जैसे-तैसे काम नहीं चलाना है। बल्कि हमें तो एक-दिल होना है। हमें अपने-आपको दूसरे को या जगत को धोखा नहीं देना है। इसलिए जो-कुछ मन में भरा हुआ हो उसे प्रकट करना चाहिए। एक बार मन में भरा हुआ मैल निकल जायगा, तो फिर नया भरने में देर लगेगी। लेकिन यदि जरा भी मैल रहा, तो जैसे मैले बरतन में डाला हुआ साफ़ पानी भी मैला हो जाता है, वैसे ही मैले मन में अच्छे विचार

मिल जायं, तो वे भी मैले बन जाते हैं। जिसके बारे में हमें एक बार शक हो जाता है, उसकी तमाम बातों पर हमें संदेह रहने लगता है।

... ...

भीतर-ही-भीतर जबतक शृंगार का मोह बाकी है तबतक देखा-देखी कुछ भी फेर-बदल या त्याग करना व्यर्थ है। जब मोह उतर जाय और फिर भी मन उस तरफ जाता हो, तब तो देखा-देखी, शरम से या किसी भी बहाने मोह को मारना चाहिए और उचित परिवर्तन कर लेना चाहिए। मोहादि शत्रु हमें इतना तंग करते हैं कि हमें जो भी उचित मदद मिल जाय, उसका उपयोग करके हम उनसे बच जायं। यह सब उनके लिए लिखा जाता है, जो सच्चे हैं और सच्चे बनना चाहते हैं। गीताजी में एक जगह कहा है कि जो ऊपर से संयम करके मन में विषयों का सेवन करता है वह मूढ़ात्मा मिथ्याचारी है।

... ...

हमें जो-कुछ करना है, वह हिम्मत के साथ क्यों न करें ? जैसे हैं वैसे दिखने में डरना क्या ? स्वाद का रस लेना हो, तो उसे छिपाना क्यों ?

स्वाद का रस लेने में पाप नहीं है। लेने की इच्छा होने पर भी न होने का भाव दिखाने में पाप है, फिर

चोरी से लेने में पाप है। जिसे स्वाद का रस लेना हो, वह ले सकता है। मर्यादा इतनी ही है कि रसोईघर में जितने स्वाद होते हों, उतने ही भोगे जायं। सब बहनों से मेरी मांग इतनी ही है: जैसी हो वैसी दिखना। जो करना हो सो खुले तौर पर करना, किसीसे मत दबना, और शरमाकर 'हां' करने के बाद उससे उल्टा आचरण मत करना।

... ...

हरेक क्रिया में स्वच्छता होनी चाहिए, संयम होना चाहिए। शरीर ईश्वर का मंदिर है। उसे हम झाड़-बुहारकर साफ़ रखें और अन्न देकर उसकी नित्य रक्षा करें। इस कल्पना को तुम हजम कर लो, तो हम खाने में जो लड़ाई-झगड़ा देखते हैं, वह सब बंद हो जाय।

... ...

जहां हिम्मत नहीं, वहां सत्य हो ही नहीं सकता। भूल करने में तो पाप है ही, परंतु उसे छिपाने में उससे भी बड़ा पाप है। शुद्ध हृदय से जो अपने-आप भूल कबूल कर लेता है, उसका पाप धुल जाता है और वह सीधे रास्ते लग जाता है। जो झूठी शर्म रखकर भूल को छिपाता है, वह गहरे गड्हे में गिरता है। इसलिए झूठी शर्म से बचना। जाने-अनजाने बुरा हो जाय तो फौरन जाहिर करना और दुबारा ऐसा न करने का

निश्चय कर लेना।

... ...

स्वराज्य का अर्थ यह है कि दूसरों पर नहीं, बल्कि अपने पर राज्य करें, यानी अपनेपर अंकुश रखें। जिसने अपनी इंद्रियों पर काबू पा लिया है, उसने सब कुछ पा लिया है।

... ...

अच्छी तालीम तो हृदय की है। अगर उसमें शुद्ध प्रेम प्रकट हो, तो बाकी सबकुछ अपने-आप ही आ जाता है। सेवा का क्षेत्र अमर्यादित है। सेवा की शक्ति भी अमर्यादित बनाई जा सकती है, क्योंकि आत्मा की शक्ति की कोई मर्यादा है ही नहीं। जिसके हृदय के कपाट खुल गये हैं, उसके हृदय में तो सब-कुछ समा सकता है। ऐसे आदमी का जरा-सा काम भी खिल उठता है। जिसके हृदय पर मुहर लगी हुई है, उसका ज्यादा काम भी नहीं के बराबर है। विदुरजी की भाजी और दुर्योधन के मेवे में यही अर्थ छिपा हुआ है।

... ...

लखनऊ तो बहनों के परदे का केंद्र माना जाता है। यहां मुसलमान बहनें बहुत रहती हैं। उन्होंने मुझसे पूछा कि उनका दुःख कैसे मिटे? मैं तो एक ही जवाब दे

सकता हूं न ! अपने बंधन हम खुद ही तैयार करते हैं।

... ...

मेरी सिफारिश तो इतनी है : बहुत चर्चा न करना, बहुत समय भी न लेना। जरूरी बातें करके झट निर्णय कर डालना और जो निर्णय करो उसपर कायम रहना। ऐसा करके ही हम आगे बढ़ेंगे। दोनों रायों के पक्ष में दलीलें तो हो ही सकती हैं। किसी भी राय पर पहुंचने में कुछ-न कुछ भूलें भी होती हैं। इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए।

निश्चय करने की और उसपर डटे रहने की आदत डालने की बड़ी जरूरत है। कोई निश्चय करने के बाद यदि यह लगे कि उसमें पाप ही है, तो अलग सवाल है। पाप करने के निश्चय दुनिया में हो ही नहीं सकते।

: २ :

सबको अपने जैसा समझना

यहां की बहनें चांदी के भारी गहनें बहुत पहनती हैं, बच्चों को मैला रखती हैं, बालों में कंघी नहीं करतीं। इसलिए गहनों की आलोचना की। नतीजा यह हुआ कि उनमें से कुछने अपने गहने मुझे दे दिये

और वे भी इस शर्त पर कि दूसरे नहीं खरीदे जायंगे। बा मुझे इस काम में खूब मदद दे रही है। ऐसे काम मैं करता हूं उससे तुम बहुत ज्यादा अच्छी तरह कर सकती हो। मगर इसके लिए त्याग चाहिए। सुविधा चाहिए।...हम श्लोक गाते ही हैं न—आत्मवत् सर्वभूतेषु—सबको अपने जैसा समझना। यों समझें तो किसीके बच्चे मैले हों, तब यह मानकर कि हमारे ही बच्चे मैले हैं, हम शर्मायें; कोई दुःखी हो, तो यह समझकर कि हम ही दुःखी हैं, दुःखी हों और उस दुःख को मिटाने का उपाय करें।

आश्रम के मजदूरों के साथ संबंध जोड़ने की मेरी बात का रहस्य तुम समझ गई होगी। वे हमें और हम उन्हें समझें, एक-दूसरे के सुख-दुःख में भाग लें। यह तो हृदय-परिवर्तन करने की बात है। हम जो खाते हैं वह उन्हें खिलावें, जो पहनते हैं वह उन्हें पहनावें, यह लोभ हमें होना चाहिए। हमें जो अच्छा लगता है और हम जो प्राप्त करते हैं, उस सबमें वे हिस्सेदार बनें, ऐसी इच्छा हममें होनी चाहिए; और जहां उस-पर अमल हो सके वहां करना चाहिए।

सब बातों के कम-से-कम दो अर्थ तो हो ही सकते हैं। एक संकीर्ण और दूसरा व्यापक! व्यापक को समझें और अमल संकीर्ण से शुरू करें, तो घबराहट

नहीं होगी।

... ...

हम एक कुटुंब बन गये हैं। कुटुंब में खलबली मचती है, तो हम क्या करते हैं ? अगर दोनों सच्चे हों, तो एक दूसरे का रोष सहन करते हैं; अपने-आपको शांत करने की कोशिश करते हैं। हम सब अपना धर्म पालन करने लग जायं, तो जो न पालते हों वे पालने लग जायं। उदारता का पदार्थ-पाठ तभी सीखा जाता है, जब हम किसीको दोषी मानते हों, तब भी उसके प्रति रोष न रखकर उससे प्रेम करें, उसकी सेवा करें। जब-तक एक-दूसरे के बीच विचार और आचार की एकता है, तबतक यदि सद्भाव रहता है, तो यह उदारता या प्रेम का गुण नहीं। वह तो केवल मित्रता है, परस्पर प्रेम है, इतना ही कहा जा सकता है।

मगर वहां प्रेम शब्द का उपयोग अनुचित मानना चाहिए। उसे स्नेह कहेंगे। दुश्मन के प्रति मित्रभाव का नाम प्रेम है।

... ...

मंदिर के सारे बच्चे तुम्हारे ही बच्चे हैं। उनमें से कोई चला जाय तो समझना चाहिए कि ईश्वर ले जा रहा है। इन सब बच्चों पर बराबर प्रेम रखना सीख जायं।

: ३ :

नीतिमय जीवन

मनुष्य का सौंदर्य उसकी नीति में है। पशु की सुंदरता उसके शरीर से देखी जाती है। मनुष्य के सुधार का आधार तो उसके हृदय पर है, उसकी धन-संपत्ति पर नहीं।

... ...

हमें तो मां-बाप के धन की विरासत में नहीं, बल्कि चरित्र की विरासत में—आध्यात्मिक विरासत में—वृद्धि करनी है। फिर भी हमें अभिमान नहीं करना चाहिए। नम्रता के बिना आध्यात्मिक विरासत मिलती ही नहीं।

... ...

तमाम संसार विमुख हो जाय तो भी मनुष्य सत्य का, अहिंसा का पालन कर सकता है। अगर हम झगड़ा न करना चाहें, तो दूसरा आदमी झगड़ा कर ही नहीं सकता। वह थककर चुप हो जायगा। गुस्से के जवाब में गुस्सा करने से गुस्सा बढ़ता है। जलते में घी डालने जैसा होता है।

... ...

मैं मिट्टी का पुतला बनाकर जरूर पूजा करूंगा,

अगर उससे मेरा मन हलका होता हो। मेरा जीवन सार्थक होता हो तो ही बाल-कृष्ण की मूर्ति की पूजा काम की है। पत्थर देवता नहीं है, मगर पत्थर में देवता का निवास है।

... ...

अपने बारे में अपने मन में असंतोष का रहना एक तरह से अच्छा है। मगर वह असंतोष हद से ज्यादा न होना चाहिए। एक हद तक असंतोष रहे, तो मनुष्य ऊपर उठता है। मगर यदि वह व्यर्थ ही अपने-आपमें हमेशा दोष निकालता रहे कि मुझे यह नहीं आता, वह नहीं आता, तो सचमुच वह उसे आवेगा भी नहीं और वह मूर्ख बन जायगा। हमें मन के भीतर प्रसन्नता रखनी चाहिए और उसके साथ-साथ एक तरह का असंतोष भी रखना चाहिए। तब तो हमारी उन्नति होगी।

... ...

हम वैभव में पड़ गये हों तो शरमायें। वैभव बढ़ायें तो शर्म के मारे हमें गड़ जाना चाहिए। मगर लोग तो अपने लोभ को ही धर्म समझकर धन इकट्ठा करते हैं। यह बात ठीक नहीं है। जितना बाहर का प्रपंच बढ़ाते हैं, उतना भीतरी विकास कम होता है, उतनी धर्म की हानि होती है।

... ...

अगर हम समदर्शी बनना चाहते हों, तो हमें ऐसा हिसाब बैठाना चाहिए कि जो सारी दुनिया को मिले सो मुझे मिले। अगर तमाम जगत् को दूध मिले, तो हमें भी दूध मिले। ईश्वर से हम कह दें कि अगर मुझे दूध पिलाना हो तो सारे संसार को दूध पिला। मगर ऐसा कौन कह सकता है? जिसमें इतनी करुणा हो, जो दूसरों के लिए मेहनत-मजदूरी करता हो। हम इस कानून को निभा तो नहीं सकते मगर समझ तो सकते हैं।

... ...

दो-चार पत्थर जमा करके बनाया हुआ मंदिर किसी काम का नहीं। हम अपने हृदय में मंदिर न बना सकें, तो वह किस काम का है।

... ...

...प्रार्थना का वक्त हो गया। और सब भूल जायं, पर प्रार्थना न भूलें। इसमें एक दूसरे का और सबका ईश्वर के साथ सहयोग है। यह सच्चा स्नान है। जैसे शरीर बिना धोये बिगड़ता है, वैसे ही हृदय को प्रार्थना द्वारा धोये बिना, आत्मा जो स्वच्छ है, वह मालिन दिखाई देती है। इसलिए प्रार्थना कभी न छोड़ना।

... ...

हम तो मूर्ति-पूजक भी हैं और मूर्ति-भंजक भी। मूर्ति के भीतर समाई हुई पाषाणता के भंजक हैं। परंतु

उसके अंदर समाई हुई ईश्वर की भावना के पूजक हैं।

... ...

जिस ज्ञान में नम्रता नहीं, कोमलता नहीं, उस ज्ञान को क्या करें ?

... ...

दुनिया में एक दूसरे के साथ प्रेम के व्यवहार के जितने प्रसंग होते हैं, उनकी तुलना में लड़ाई-झगड़े के अवसर तो बहुत कम होते हैं। दुनिया में हम इतने गांव और शहर बसे हुए देखते हैं। अगर संसार हमेशा लड़ाई पर चलता होता, तो इन गांवों और शहरों की हस्ती ही न होती।

... ...

हमारे यहां जो चोरियां होती रहती हैं, उनका कारण हमारी गफलत है। यह रोज साबित होता जा रहा है। हम सावधान नहीं रहते। चोर तो दुनिया में रहेंगे ही। उनसे बचने के तीन उपाय हैं; पास में कुछ रखा ही न जाय; यह पूर्णता तो आ नहीं सकती। जितना रखें उसके लिए सावधान रहें। और तीसरा उपाय, चोर को सरकार के दंडरूपी भय से चमकाना और खुद भी उसे दंड देने में शरीक होना। हमने इस तीसरे उपाय का त्याग कर दिया है। पहला उपाय हमारा आदर्श है, दूसरा उपाय हम आजकल कर रहे हैं। संग्रह

जहांतक होसके कम किया जाय और जितना अनिवार्य है, उसकी चोरी वग़ैरा से रक्षा की जाय।

... ...

जिस आदमी ने दंडनीति ग्रहण की है, शस्त्रनीति ग्रहण की है, उसे छल-कपट करना ही पड़ता है। इस नीति के साथ छल-कपट लगे ही हुए हैं।

... ...

हिंदुस्तान में बहनों को अपने शरीर को डाक्टर को दिखलाने में संकोच होता है। यह अच्छा नहीं, परंतु खराब रिवाज है। इस शर्म की जड़ में पवित्रता नहीं परंतु विकार है। मैं चाहता हूं कि हम इस अंध-विश्वास को दूर कर दें। पुरुष डाक्टर को भी अपना शरीर दिखाने में किसी स्त्री को संकोच नहीं करना चाहिए। पास में अपने सगे-संबंधी तो होते ही हैं। इसलिए भय का कोई भी कारण नहीं हो सकता।

... ...

अस्पताल में किस तरह के लोग आते हैं, यह वहां जाकर देखें तो हम कांप उठें। डाक्टर दवा देता है, मगर उसके साथ ही नीरोग रहना सिखाना उसका काम है। लेकिन यह काम शायद ही कोई डाक्टर करता होगा। बहुतेरे डाक्टर तो शरीर की झूठी हिफाजत में लग जाते हैं। ऐसा करके वे मनुष्य की नीति और आत्मा को

नुकसान पहुंचाते हैं। और शरीर की चिंता करके वे शरीर की भी रक्षा नहीं कर सकते।

जीवित प्राणियों को मारकर शरीर के लिए दवाएं तैयार करना, शरीर को जोड़ना और दो-चार टांके लगाना सीखना भी कोई इन्सान का काम है? ऐसा तो राक्षस करते हैं।

: ४ :

सेवा और त्याग

धर्म परोपकार में है। परोपकार यानी दूसरे का भला चाहना और करना, दूसरे की सेवा करना। इस सेवा का आरंभ करते हुए एक-दूसरे के साथ सगी बहन का-सा स्नेह रखना, एक के दुःख में सबका दुःखी होना।

... ...

तुम कुशल बनकर और पवित्र जीवन बिताकर सारे भारतवर्ष में फैल जाओ, क्या यह आशा तुम्हारी शक्ति से ज्यादा है? क्षण-क्षण मैं स्त्री-सेविकाओं की ज़रूरत देख रहा हूं। त्यागी पुरुष देखने में आते हैं। लेकिन त्यागी स्त्रियां प्रकट रूप में थोड़े ही दिखाई देती हैं? स्त्री तो त्याग की मूर्ति है। मगर इस समय उसका त्याग कुटुंब में समा जाता है। जो त्याग वह कुटुंब की

खातिर करती है, उससे ज्यादा वह देश के लिए क्यों न करे ? अंत में तो जो धर्म-परायण बनती है, वह विश्व के लिए त्याग करेगी। मगर देश तो पहली सीढ़ी है। और जब देश-हित विश्व-हित का विरोधी न हो, तब देश-हित-सेवा हमें मोक्ष की तरफ ले जानेवाली बन सकती है।

... ...

सच्ची सेवा करनेवाली बहनें आश्रम में तैयार नहीं होंगी, तो कहां होंगी ?...हमारे पास इस काम के लिए न आवश्यक स्वास्थ्य है, न शक्ति है, न अक्षर-ज्ञान है। पर हममें शुद्ध भक्ति हो, तो उसके जरिये यह सब आ जाता है। भक्ति का अर्थ है श्रद्धा, ईश्वर के प्रति और अपने प्रति। यह श्रद्धा हमसे सारे त्याग कराती है। त्याग के लिए त्याग करना मुश्किल होता है, परंतु सेवा के निमित्त त्याग आसान हो जाता है। कोई माता जान-बूझकर गीले में नहीं सोती, मगर अपने बच्चे को सूखे में सुलाने के लिए खुद खुश होकर गीले में सो जायगी।

... ...

...तुमने निरक्षर बहन को प्रमुख नियुक्त करके सद्वर्तन को, त्याग को, प्रधानता दी है। यही होना चाहिए। सद्वर्तन के बिना ज्ञान बेकार है। इसके बारे में कभी शंका न करना।

याद रखना कि तुम सब बहनें भारत माता से सूत के धागे से बंधी हो। सूत को भूलोगी, तो सेवा को भूलोगी। इसलिए चरखा न भूलना। राम तो 'आज चरखे में ही बसता है। चारों ओर भुखमरी का दावानल सुलग रहा है। उसमें मुझे तो चरखे के सिवा और कोई आधार दिखाई नहीं देता। भगवान किसी मूर्तरूप में ही हमें दिखाई देता है। इसीलिए द्रौपदी के बारे में हम गाते हैं, 'वसन रूप भये श्याम'। जिसे देखना हो, वह उसे चरखे के रूप में देख ले।

... ...

जो अपनी शक्ति के अनुसार करता है, वह सब-कुछ करता है। मगर काम करने में जो गीता-दृष्टि हम चाहते हैं, वह पैदा करनी चाहिए। गीता-दृष्टि यह है कि सब काम सेवा-भाव से करें। यानी ईश्वरार्पण करके करें। और जो ईश्वरार्पण करके करता है उसमें यह भाव नहीं होता कि 'मैं करता हूं'। उसमें द्वेषभाव नहीं होता। उसमें दूसरों के प्रति उदारता होती है।

... ...

कर्तव्य-परायणता ही प्रार्थना है। प्रत्यक्ष सेवा के लिए योग्यता प्राप्त करने को प्रार्थना में बैठते हैं। मगर जहां प्रत्यक्ष कर्तव्य आ पड़े, वहां प्रार्थना उसमें समा जाती है। समाधि में बैठी हुई स्त्री किसीको बिच्छू

काटने पर चिल्लाते हुए सुने, तो वह समाधि छोड़कर उसकी मदद के लिए दौड़ने को बंधी हुई है। दुखी की सेवा में समाधि की पूर्ति है।

... ...

मजदूरी में नम्रता का भाव है। इसीलिए वह कर्म-योग है। मगर जो पैसे के लिए मजदूरी करते हैं, उनकी मजदूरी कर्मयोग नहीं कही जा सकती; क्योंकि वे केवल पैसे के लिए मजदूरी करते हैं। पैसों के लिए पाखाना साफ़ करना कोई यज्ञ नहीं है। परंतु सेवार्थ, सफ़ाई की दृष्टि से, दूसरों के भले के लिए पाखाने साफ़ करना यज्ञ कहलाता है। सेवा-भाव से, नम्रतापूर्वक, आत्म-दर्शन के लिए कोई मजदूरी करे तो उसे आत्म-दर्शन होगा। ऐसे मजदूरी करनेवाले को आलस्य तो आना ही नहीं चाहिए। वह अतंद्रित होगा।

... ...

जो अपने स्वार्थ का विचार करते होंगे, उनका पतन जरूर होगा। जो सेवा-परायण रहेंगे, उन्हें पतन का समय भी कहां से मिलेगा? पापकर्म को अंधेरे की जरूरत होती है। वह ज्यादातर छिपकर ही होता है।

हमारे बहुत-से काम रुक गये हैं, इसका एक कारण स्वार्थ है, और उस स्वार्थ में हमारे और समाज के पतन की संभावना छिपी हुई है।

: ५ :

सादा रहन-सहन

...'यहां का दृश्य बहुत बढ़िया है। ठेठ ब्रह्मपुत्रा के किनारे हमारी झोंपड़ी बनाई गई है। ऊपर घास का छप्पर है। यहीं के बांस की पट्टियों की दीवार है। उसे मिट्टी से लीप दिया गया है और अंदर सब जगह आसमानी खादी से सजा दी गई है। भीतर खाट नहीं है। मगर यह कहा जा सकता है कि बांस के पायों का एक तख्ता बनाया है। उसपर घास बिछा दी है और उसके ऊपर जाज़म और जाजम के ऊपर खादी। इसी खाट पर मैं बैठता हूं, खाता हूं और सोता हूं।...ज़मीन पर भी घास बिछाकर उसपर जाजम और उसपर खादी बिछा दी है। ऐसी झोंपड़ी में रहना किसे पसंद न होगा ?

... ...

लंका की स्त्रियों को देखकर आश्रम की स्त्रियां समय-समय पर याद आती हैं। एक तरफ स्त्रियों की पोशाक सादी है, यह तो लिख ही चुका हूं। दूसरी तरफ़ बड़े घरों की स्त्रियों ने इतना ज्यादा शौक बढ़ा लिया है कि उनके शरीर पर रेशम और ज़री के सिवा कुछ भी नहीं पाया जाता। मेरी नज़र में तो यह बिल-

कुल शोभा नहीं देता। स्त्रियां ऐसी पोशाक किसे दिखाने या रिझाने को पहनती होंगी। यहां पर्दा तो है ही नहीं!

स्त्रियां जितना बनाव-सिंगार करती हैं, वह सब किसलिए ?

... ...

मसूरी एक ऐसी जगह है, जहां राग-रंग की सीमा ही नहीं। यहां परदा तो शायद ही हो। धनिक स्त्रियां नाच-गान में भी शरीक होती हैं। होठ रंगती है, तरह-तरह के साज सजती हैं और पश्चिम का हानिप्रद अनुकरण खूब करती हैं। हमारा तो मध्यम मार्ग है। हमें अंध-विश्वास और परदे को नहीं पालना है, तो निर्लज्जता और स्वच्छंदता को भी पोषण नहीं देना है। यह बीच का मार्ग सीधा है, मगर मुश्किल भी। इस मार्ग पर लगना और कायम रहना हमारा उद्देश्य है।

: ६ :

कर्त्तव्य और प्रयत्न

एक होने के प्रयत्न तुम कभी न छोड़ना। हमारी कोशिश में ही कामयाबी है। शुभ प्रयत्न कभी बेकार नहीं जाते, यह भगवान की प्रतिज्ञा है और इसका थोड़ा

बहुत अनुभव हम सबको है। लिया हुआ काम घबराकर हरगिज़ न छोड़ना। घबराने या हारने का कोई कारण ही नहीं। मतभेद, राग-द्वेषादि के रहते हुए भी जो काम हैं, सो तो होने ही चाहिए। सब करें उससे कम तो हम हर्गिज न करें।

... ...

...मैं देखता हूं कि तुम्हारा पींजने का काम ठीक चल रहा है। इसी तरह नियमित चलती रहोगी तो थोड़े समय में बहुत प्रगति कर लोगी। नियमित किये गये काम का असर नियमित किये गये भोजन-जैसा होता है। वह आत्मा का पोषण करता है। एक ही बार में ज्यादा ली हुई खुराक जैसे शरीर को बिगाड़ती है, वैसे एक ही बार में अधिक किये हुए काम से आत्मा को तकलीफ होती है।

... ...

जो अपने कर्तव्य के ही ध्यान में रम जाता है, वह दूसरी वस्तुओं से उदासीन हो जाता है। पत्थर तटस्थ है, परंतु उसे हम जड़ मानते हैं। उसके मुकाबले में हम चेतन हैं। और इतने पर भी प्राप्त हुए कार्य में ही रत रहें और दूसरी किसी बात का विचार तक न करें, तो हमारा जीना सफल माना जा सकता है। ऐसी ध्यानावस्था एकाएक नहीं आती।

तुम देखती होगी कि तुम सबकी जिम्मेदारी दिन-रात बढ़ती जा रही है। कोई घबराये नहीं। कर्तव्य-परायण रहना और अशांति में से शांति प्राप्त करना सीखना। हमारा आनंद हमारे धर्म-पालन में हो, कार्य की सफलता में या संयोगों की अनुकूलता में नहीं।

मगर मनुष्य तो रंक प्राणी है। वह राजा तभी होता है, जब वह अहंकार छोड़कर ईश्वर में समा जाता है। समुद्र से अलग होकर बिंदु किसीके काम नहीं आता। परंतु समुद्र में समा जाने से अपनी छाती पर इस बड़े जहाज़ का भार झेल रहा है।

... ...

कोई काम हाथ में न लेना ठीक है। परंतु लेलें तो उसके लिए मर-मिटना चाहिए। जो इतनी दृढ़ता से काम करता है, उसे भगवान सहायक होता ही है। गजेंद्र-मोक्ष और कछुआ-कछुवी के भजन में यही सीख है।

... ...

हाजिरी में अनियमितता बहुत पाता हूं। बहनों ने इस वर्ग में नियमित रूप से आने का व्रत लिया है। वे इस व्रत को कैसे तोड़ सकती हैं ? शरीर के नियमों का पालन करके शरीर की रक्षा की जाती है। संस्था के नियमों का पालन करके संस्था को और समाज

के नियमों का पालन करके समाज को कायम रखा जाता है। इसलिए क्या तुम मुझे यह आश्वासन नहीं दे सकतीं कि संशयरहित कारण के बिना कोई भी बहन गैर-हाजिर नहीं रहेगी?

... ...

यहां जो एक बात देखी, उसकी तरफ तुम्हारा ध्यान तुरंत खींचता हूं। मैं तो आश्रम के रसोईघर में ही खाने लगा हूं। तीनों बार वहीं खाया, परंतु शोर-गुल जैसी बात ही नहीं। इससे बहुत शांति रही, और हमारा शोर-गुल याद आया। यहां न बर्तनों की खड़खड़ाहट सुनाई देती है और न लोगों की आवाज़। इतना फर्क जरूर है कि हमारे वहां बच्चे हैं, यहां नहीं हैं। फिर भी तुम चाहो तो बच्चों को चुप रहना सिखा सकती हो और तुम खुद भी बातें करना बंद रख सकती हो। हमारे रसोईघर में शोर नहीं मिटता, यह तो बड़ी भारी खामी है। तुम अपना कर्तव्य तो जानती ही हो। जो-जो काम लिये हैं, उन्हें हारकर कभी न छोड़ना।

... ...

एक बहन ऐसी है जिसे एक अक्षर भी नहीं आता। एक का अंक तक नहीं बना सकती। फिर भी वह अपने काम में मगन रहती है। अपना न हो, तो एक घास के तिनके को भी वह नहीं छूती। सपने में भी चोरी

नहीं करती। यह पूछो कि भागवत क्या है, तो सामने देखने लगती है, मगर सबपर प्रेम इतना रखती है कि जैसे साक्षात् जगदंबा हो।

जब कि दूसरी ऐसी हो जिसे सबकुछ आता हो, उपनिषद् कंठस्थ हों, उच्चारण भी खूब बढ़िया हो, परंतु वह चोरी करे, झूठ बोले, औरों से काम करा लेने में पक्की हो, उसमें बत्तीस लक्षण हों।

इन दोनों में से अच्छी तो पहली ही है। इसमें जरा भी शक नहीं। मगर उसे लिखना-पढ़ना आता हो, तो उससे भी अच्छी हो सकती है।

: ७ :

अबला नहीं, सबला

तुम यह भूलने की कोशिश करो कि तुम अबला हो। इस बारे में मेरे लिखे हुए का कोई यह अर्थ तो भूल से भी न करे कि पुरुषों को अपना (स्त्री) रक्षा का धर्म भूल जाना है। स्त्री अपना अधिकार प्राप्त करने की कोशिश करे, उससे पुरुष यदि यह मानले कि अब वह होशियार हो गई है और बैठा रहे, तो उसकी गिनती कायरों और निर्लज्जों में होगी। वह नामर्द माना जायगा। उसीने स्त्री को पराधीन रखा है,

इसलिए उसको तो रक्षा का काम करना ही है।

... ...

यह प्रश्न कई बार पूछा जाता है कि स्त्रियां अपने सतीत्व की रक्षा कैसे करें? और स्त्रियों को यह सुझाया जाता है कि वे खंजर रखें। अगर स्त्रियां खंजर रखने लगेंगी, तो वह खंजर उन्हींके विरुद्ध काम आवेगा। खंजर काम में लाने के लिए तो बहुत कठोरता चाहिए। खंजर इस्तैमाल करने के लिए हमें सारा सांसारिक जीवन बदलना चाहिए। जिस आदमी ने कभी खून न देखा हो, खून निकाला न हो वह खंजर इस्तैमाल नहीं कर सकता। खंजर काम में लाने के लिए शिकार करना चाहिए, कितने ही बकरे काटने चाहिए; किसीके शरीर में खंजर भोंकने के लिए हृदय को कठोर बनाना चाहिए।

इसलिए स्त्रियों को खंजर इस्तैमाल करना सिखाने के बजाय यह शिक्षा देनी चाहिए कि तुम्हें डर किसका है? तुमपर सदा ही ईश्वर का हाथ है। कैसा ही दुष्ट मनुष्य तुमपर हमला करने आवे तो तुम रामनाम लेना। बहुत-से दुष्ट मनुष्य तो इस प्रकार से ही भाग जायंगे। मगर कदाचित ऐसा न भी हो तो क्या? उस समय हमें मर-मिटना चाहिए। कितना ही दुष्ट मनुष्य हो, हम मर मिटें, लेकिन उसके बलात्कार के वश न हों,

तो वह दुष्ट मनुष्य भी क्या कर सकता है? संभव तो यह है कि मरने की पूरी तैयारीवाले पवित्र मनुष्य के सामने कैसा भी दुष्ट मनुष्य अपनी दुष्टता छोड़ देता है।

... ...

यह देखता हूं कि स्वराज्य की कुंजी स्त्रियों के पास है। परंतु उन्हें कौन जाग्रत करे? असंख्य स्त्रियां निरुद्यमी हैं, उन्हें कौन उद्यमी बनाये? माताएं बचपन से ही अपने बालकों को बिगाड़ती हैं, उन्हें कौन रोके? बालकों को गहनों और अनेक प्रकार के कपड़ों से लाद देती हैं; छोटी-छोटी बालिकाओं को ब्याह देती हैं; बालिकाएं बूढ़ों को ब्याह दी जाती हैं। स्त्रियों के गहने देखकर तो मैं हैरान हो जाता हूं। उन्हें कौन समझाये कि इसमें सौंदर्य नहीं, सौंदर्य तो हृदय में है। ऐसी तो कई बातें मैं लिख सकता हूं, मगर उसका उपाय क्या? उपाय तो स्त्रियों में से कोई द्रौपदी-जैसी उग्र तेजवाली निकल पड़े तभी हो। ऐसी शक्ति प्राप्त करना तुम्हारा काम है। उसका निश्चय करना और बाद में धीरज रखना। जल्दी करने से काम नहीं होता।

... ...

आजकल मैं रोज एक दुग्धालय देखने जाता हूं। केवल हमारे अज्ञान और आलस के कारण रोज़ हजारों

ढोरों का नाश होता रहता है। मैं यह देख रहा हूं कि यह काम भी ऐसा है कि जितनी आसानी से पुरुष कर सकते हैं, उतनी ही आसानी से स्त्रियां भी कर सकती हैं। काठियावाड़ की ग्वालिनें और उनके हथिनी-जैसे शरीर भी मेरी निगाह के सामने खड़े होते हैं। हम (आश्रम में) किसान, जुलाहे और भंगी तो हैं ही, ग्वाले बने बगैर भी काम न चलेगा।

... ...

जो जानते हैं कि राम सबका रखवाला है, वे क्यों डरें ? राम की रखवाली का अर्थ यह नहीं होता कि कोई कभी हमें लूट न सकेगा या कोई कीड़ा हमें काट न सकेगा। यदि मन में ऐसा विचार आवे, तो उससे राम की रखवाली पर लांछन नहीं, हमारी श्रद्धा पर लांछन लगता है। नदी सबको पानी देने को तैयार रहती है। मगर कोई लोटा लेकर उसमें से न भरे या यह मानकर कि पानी जहरीला होगा, उसके पास भी न जाय, तो उसमें नदी का क्या कसूर ? भयमात्र अश्रद्धा की निशानी है। मगर श्रद्धा अक्ल दौड़ाकर नहीं पैदा की जा सकती। वह धीरे-धीरे मनन से, चिंतन से और अभ्यास से आती है। इस श्रद्धा को पैदा करने के लिए हम प्रार्थना करते हैं, अच्छी पुस्तकें पढ़ते हैं, सत्संग ढूंढ़ते हैं और चर्खा-यज्ञ करते हैं।

यह निश्चय करें कि आत्महत्या हर्गिज़ न करेंगे। आत्महत्या करनेवाले संसार की झूठी चिंता करनेवाले होते हैं या दुनिया से अपने दोष छिपानेवाले होते हैं। हम जो नहीं हैं, वह दीखने का ढोंग कभी न करें; जो न हो सके उसे करने के मनोरथ न करें।

... ...

यहां की हालत देखकर दिल जलता है। और यहीं रह जाने की इच्छा होती है। यहां सब स्त्रियां परदा रखती हैं। लोगों के पास न पूरा कपड़ा है, न खाने को। उड़ीसा में प्रवेश करने से पहले जब मीराबहन ने जितने कपड़े थे उससे भी कम करने की मांग की, तब मैं घबराया था। यहां आकर देखा कि यह मांग ठीक ही थी। यहां की स्त्रियां सिर्फ एक धोती ही पहनती हैं। आधा भाग कमर में और आधा भाग शरीर के ऊपर के हिस्से के लिए। खाने में न घी मिलता है, न दूध। लोग सब भयभीत हैं। किसी पुलिसवाले ने डरा दिया है, इसलिए मेरे पास भी नहीं आते। अगर कोई बहन इन बहनों में काम करनेवाली हो, तो मेरी राय में वह बहुत-कुछ कर सकती है।

... ...

स्त्रियों का उद्धार स्त्रियां ही कर सकती हैं। इसके लिए तपस्या की जरूरत है। यह बात सच है कि पुरुषों

से स्त्रियों में ज्यादा तपस्या है, मगर तपस्या ज्ञानपूर्वक होनी चाहिए। अभी तो वे मजदूरों की तरह लाचारी से काम करती हैं।

... ...

स्त्री को विकारी पुरुषों ने गिराया है। उसे अपने को लुभानेवाले हाव-भाव सिखाये हैं, बनाव-सिंगार करना सिखाया है। स्त्री ने इसमें अपनी पराधीनता नहीं देखी। उसे भी विकार अच्छे लगे, इसलिए नाक छेदी, कान छेदे, और पैरों में बेड़ियां पहनकर गुलाम बनी। नाक की नथ से या कान की बाली से लंपट पुरुष स्त्री को एक घड़ी में घसीट ले जाय। इस प्रकार अपंग बनानेवाली चीज समझदार स्त्री क्यों पहनती होगी, यह मेरी समझ में नहीं आता। सच्ची शोभा तो हृदय में है।

... ...

मेरा आदर्श यह है कि पुरुष पुरुष रहते हुए स्त्री बने और स्त्री स्त्री रहते हुए पुरुष बने। पुरुष के स्त्री बनने का अर्थ यह है कि वह स्त्री की नम्रता और विवेक सीखे और स्त्री के पुरुष बनने का मतलब है कि वह अपनी भीरुता छोड़कर हिम्मतवाली और बहादुर बन जाय।

: ८ :

आदर्श विवाह

शिव-पार्वती का विवाह आदर्श विवाह माना जाता है। जिसे पार्वती जैसी सच्ची शादी करनी हो, उसे तो शिवजी जैसे निर्विकारी का चिंतन करना चाहिए। ऐसी रेखा केवल पार्वती के हाथ में ही थी सो बात नहीं। हरेक स्त्री के हाथ में वह रेखा है ही।

... ...

पति के चुनाव में यह नहीं देखना है कि उसने कैसे कपड़े पहने हैं, या कैसा साफ़ बांधा है। परंतु यह देखना है कि उसकी विद्या कितनी है। गुण कैसे हैं?

... ...

विवाह की बात करने में संकोच न करें। मगर विवाहित या कुंआरे इस बात से विकारवश भी न होवें। जो अपने विकारों को न रोक सके, वह ज़रूर शादी कर ले। जो विकार रोक सके, वह रोके और इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करने की कोशिश करे।

... ...

चरित्रवान् आदमी मिले तो ठीक है, न मिले तो कुंवारी रहने का संकल्प करना चाहिए। हरेक कन्या को पार्वती का आदर्श रखना चाहिए।

१. [illegible]
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज़्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम
५२. कब्रों का मिलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. काला पानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारू-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीर्थ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेन्द्र बाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. आनबान के रखवाले
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे